## पद १२

(राग: दुर्गा - ताल: धुमाळी) 🦠

विसरूं जिर या चरणा हे प्रभो, तिर द्यावें मरणा, हे प्रभो। देह पड़ो दुर्मरणचि येवो, न करूं तव स्मरणा, हे प्रभो।।धु.।। शतमख जिर केलों विधिने, वेद स्तविजेलों विधिनें। धीश सुरेश महेशिह झालों, पिर पावो पतना, हे प्रभो, जिर न करूं नमना हे प्रभो।।१।।

परिसद्ध्या वळल्या आपणिच, गुरुपद मज आलें आपणिच। योग जळो आणि ज्ञान जळो तें, जी न करी भजना, झडू दे ती रसना।।२।। रौरव नरक घडो या देहींच, मुखिं बहु कृमी पडो या देहींच। निंदा जिर करूं निजगुरुस्थाना। आणि डोलवूं माना, हे प्रभो, नरककूप कानां भो हिर।।३।। टाकुनि गुरुमंत्रा कुमितनें, पूजूं सुरयंत्रा सुमितनें। माणिक माणिक हा जप सोडुनि, आणिक धरूं ध्याना। न्यावे यमसदना, हे प्रभो।।४।। सेवक हा तुमचा हो प्रिय, बोला मुखें, 'आमुचा हो प्रिय।' ज्ञानरूप मार्तांडस्वरूपीं, अभेदमित जडूं द्या। सेवा ही घडू द्या हे प्रभो।।५।।